असली पढ़ाई

बच्चों को किस लिए पढ़ना है?
बड़ों को बच्चों का किस लिए पढाना है?

क्या पेट पालने के योग्य बनाने के लिए है पढाई?
या फिर मनोल्लास के लिए या संपूर्ण आत्मिक विकास के लिए?

इनमें से किसी एक के लिए ही पढाई की जरूरत नहीं है, सबके लिए पढ़ाई करनी है।
परन्तु आत्मा की पढ़ाई ही बच्चों के लिए पहला पाठ्यशास्त्र बनना है क्योंकि-
आत्मविद्या से बच्चेनिडर और दृढ़निश्चयी होते है।
आत्मविद्या से अन्य सभी विद्याएँ जल्दी सीखो जाती है।
आत्मविद्या से खेल-संगीत सब सहज ही आते ह।
आत्मविद्या से प्रकृति अपने रहस्यों का जल्दी प्रकट करती है।

अक्षराम्यास का मतलब आत्मविद्या ही है।
जो क्षर नहीं है, वह अक्षर है।
क्षर अर्थात् नाशवान
अक्षर अर्थात् अविनाशी, जो नष्ट नहीं होता।
आत्मा का नाश, नहीं होता, शरीर नष्ट होता है।
अक्षराभ्यास का मतलब है आत्मविद्या।
सभी बच्चों को अक्षराभ्यासी होना चाहिए।

आत्मानुभव के साथ रहना चाहिए।
भूमण्डल में अब आत्मा को शिवताण्डव करना है।
यही सच्ची पढ़ाई है।